Toppersnotes
Unleash the topper in you

HPSC

असिस्टेंट प्रोफेसर

भूगोल

हरियाणा लोक सेवा आयोग (HPSC)

भाग – 3

औद्योगिक, कृषि एवं अधिवास भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	औद्योगिक भूगोल (अर्थ प्रकर्ति एवं विषय क्षेत्र)	1
2	उद्योगों का वर्गीकरण	6
3	विश्व के उद्योग	10
4	विनिर्माण उद्योग	14
5	औद्योगिक स्थान सिद्धांत	22
6	लॉश का औद्योगिक अवस्थिति सिद्धान्त	31
7	स्मिथ का औद्योगिक अवस्थिति सिद्धान्त	42
8	ई. एम हूवर का औद्योगिक सिद्धांत	47
9	विश्व के औधोगिक प्रदेश	55
10	कृषि भूगोल (अर्थ, प्रकृति, एवं विषयक्षेत्र)	75
11	कृषि के प्रकार	82
12	कृषि उत्पादकता	88
13	कृषि प्रकारिकी	120
14	विश्व के कृषि प्रदेश	126
15	वॉन थ्यूनेन का कृषि अवस्थिति सिद्धांत	142
16	संयुक्त राज्य अमेरिका के कृषि प्रदेश	154
17	बसाव	170
18	ग्राम्य आकारिकी	177
19	ग्रामीण समस्याएं एवं नियोजन	182
20	ग्रामीण अधिवासों के प्रकार	190
21	नगरों की उत्पत्ति एवं विकास	203
22	नगरीय आकारिकी	227
23	नगरीय आंतरिक संरचना के सिद्धांत	236

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	नगरीकरण	250
25	कोटि-आकार नियम	262
26	उपनगर	266
27	मलिन बस्तियाँ	273
28	भूमि उपयोग में बदलाव	275
29	क्रिस्टालर का केन्द्र स्थल सिद्धान्त	278
30	लॉश का केन्द्रीय स्थल सिद्धांत	285

1 अध्याय — औद्योगिक भूगोल का (अर्थ प्रकृति एवं विषय क्षेत्र)

औद्योगिक भूगोल
(Industrial Geography)

अर्थ, प्रकृति, विषय क्षेत्र, विकास :-

 # अर्थ :- औद्योगिक भूगोल में मुख्य रूप से औद्योगिक स्थितियों, उद्योग के वर्गीकरण, वितरण विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है।

↳ औद्योगिक भूगोल आर्थिक भूगोल की एक शाखा है। औद्योगिक भूगोल में विनिर्माण उद्योग से सम्बंधित विभिन्न औद्योगिक पक्षो का अध्ययन किया जाता है।

 # विनिर्माण :-

↳ कच्चे माल का प्रयोग कर उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करना, विनिर्माण कहलाता है।

 # परिभाषाएँ :-

↳ औद्योगिक भूगोल के अध्ययन क्षेत्र के आधार पर कई परिभाषाएँ दी जा सकती है।

(1) रिले :- "औद्योगिक भूगोल विनिर्माण उद्योग के वितरण का अध्ययन है।"

(2) क्लार्क :- "औद्योगिक भूगोल विनिर्माण उद्योग के अवस्थिती व उनके वितरण से सम्बंधित है।"

(3) अलेक्जेण्डर "औद्योगिक भूगोल में विश्व के महाद्वीपो में फैले उद्योग की अवस्थिती व वितरण का अध्ययन किया जाता है।"

(4) जोन्सटन "औद्योगिक भूगोल, औद्योगिक क्रियाओं के स्थानिक व्यवस्था का अध्ययन है।"

Toppersnotes Unleash the topper in you

औद्योगिक भूगोल का विषय क्षेत्र

#औद्योगिक भूगोल में विनिर्माण उद्योगो से सम्बंधित सभी भौगोलिक पक्षों का अध्ययन होता है जो निम्न है :-

↳ औद्योगिक भूगोल के संकल्पनात्मक पक्षों का अध्ययन।
↳ विनिर्माण उद्योग का विकास व वर्गीकरण
↳ विनिर्माण उद्योग की स्थिति, वितरण, उत्पादन समस्याओं का अध्ययन।
↳ औद्योगिक अवस्थितिकी को प्रभावित करने वाले कारकों (पूँजी, परिवहन, श्रम, बाजार, किराया) का अध्ययन
↳ उद्योगों का भौगोलिक विश्लेषण।
↳ औद्योगिकरण से उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन।
↳ औद्योगिक प्रबंधन एंव नियोजन का अध्ययन।
↳ औद्योगिक आपदाओं का अध्ययन
↳ उद्योग, कच्चे माल स्त्रोत व बाजार केन्द्र के बीच संबंधों का अध्ययन।

औद्योगिक भूगोल के उपागम

(1) सैद्धान्तिक उपागम :-

↳ सैद्धान्तिक उपागम में उद्योगों की स्थापना से संबंधित मूलभूत संकल्पनाओं एवं उद्योगो की अवस्थितिकी के सिद्धान्तो का अध्ययन किया जाता है।
↳ औद्योगिक भूगोल की अधिकांश विषय-वस्तु बड़े उद्योगो की स्थापना एंव उनके वितरण क्षेत्र से संबंधित है।

(2) व्यवहारिक उपागम :-

↳ व्यवहारिक उपागम में उद्योगो की स्थापना से लेकर वर्तमान

स्थिति, उद्योगों के कार्य, स्थानिक संबंधो का अध्ययन किया जाता है।

(3) ऐतिहासिक उपागम :-

↳ इसे विकासात्मक उपागम भी कहा जाता है।
↳ इसमें उद्योगों के विकास संबंधित अध्ययन किया जाता है।

(4) क्रमबद्ध उपागम :-

↳ क्रमबद्ध उपागम में उद्योगो के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान स्थितियों के बदलाव का अध्ययन किया जाता है इसमें उद्योगों के वैश्विक स्तर पर वितरण को देखा जाता है।

(5) वस्तु उपागम :-

↳ इस उपागम में उद्योगो के वस्तु विशेष कार्यो पर बल दिया जाता है। ये कार्य दो तरह के होते है :→
↳ ये कार्य माल के रूप में वस्तु विशेष पर बल।
↳ उत्पाद के रूप में वस्तु विशेष पर बल।

प्रादेशिक उपागम :-

↳ इस उपागम में किसी क्षेत्र विशेष में औद्योगिक विकास व उद्योगों के प्रकार, वितरण का अध्ययन किया जाता है।

औद्योगिक भूगोल का विकास :-

↳ औद्योगिक भूगोल की नवीन शाखा है जिसका विकास काफी देर से हुआ है।
↳ औद्योगिक भूगोल का आधुनिक विकास 1950 के बाद हुआ है द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विकसित देशों की औद्योगिक ईकाइयाँ नष्ट हो गयी थी साथ ही 1950 तक ब्रिटेन के अधिकांश उपनिवेश भी स्वतन्त्र हो गये थे। इस कारण 1950 के बाद विश्व में तीव्र गति से औद्योगिक

विकास हुआ है।

↳ औद्योगिक भूगोल का विकास कई चरणों में हुआ।

(1) मात्रात्मक क्रान्ति :-

↳ 1950 से 1960 के दशक में भूगोल में मात्रात्मक क्रान्ति का उद्भव हुआ जिससे विषय को वैज्ञानिक बनाने का प्रयास किया गया व भूगोल में भी आकड़ो का सहारा लिया जाने लगा।

↳ मात्रात्मक क्रान्ति के फलस्वरूप औद्योगिक अवस्थितिकी सिद्धान्तों जैसे वेबर, लॉश, स्मिथ, आदि को स्वीकार किया गया साथ ही औद्योगिक संबंधी कई मॉडल व सिद्धान्त अस्तित्व में आये।

(2) व्यवहारवाद का विकल्प :-

↳ भूगोल में व्यवहारवाद का विकास 1960 में हुआ, ये मात्रात्मक क्रान्ति के बाद व्यवहारवाद आया।

↳ व्यवहारवाद के विकास के बाद मात्रात्मक क्रान्ति के दौरान अस्तित्व में आये औद्योगिक अवस्थितिकी के सिद्धान्तों का महत्व कम होने लगा।

↳ व्यवहारवाद के विकास के बाद क्षेत्र विशेष में निवास करने वाले लोगों की सोच व विवेक के आधार पर आर्थिक कार्य किये जाते है जिससे हर क्षेत्र में औद्योगिक विकास की सम्भावनाएँ पनपने लगी।

Note :- एलन पेड ने औद्योगिक अवस्थितिकी का व्यवहार परख मॉडल प्रस्तुत किया।

(3) मार्क्सवादी भूगोल :-

↳ मार्क्सवादी भूगोल के विकास के बाद पूँजीवाद पर आधारित उद्योगों के विकास का विरोध होने लगा व पूँजीवाद पर आधारित अवस्थितिकी के सिद्धान्तो की आलोचना की क्योंकि

इससे औद्योगिक संकेन्द्रण को बढ़ावा मिलता है इससे ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों के बीच आर्थिक असमानता उत्पन्न होती है। पूँजीवाद ने इस असमानता को दूर करने के लिए पिछड़े क्षेत्रों में भी उद्योगो की स्थापना पर बल दिया जिससे ग्रामीण लोगों को भी रोजगार मिल सके।

कल्याण परख उपागम :-

↳ कल्याण परख भूगोल का विकास 1970 में हुआ।

↳ कल्याण परख उपागम में सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण पर बल दिया जाने लगा।

↳ इस उपागम के आधार पर बताया कि उद्योगों का विकास इस तरह होना चाहिए जिससे अधिकतम व सभी मानव लोगों को रोजगार के साधन उपलब्ध हो जिससे सबका कल्याण हो सके।

वैश्वीकरण व बहुराष्ट्रीय निगमों का प्रसार :-

↳ प्रारम्भ में औद्योगिक भूगोल में केवल पश्चिमी विकसित अर्थव्यवस्थाओं का ही अध्ययन किया जाता था लेकिन बहुराष्ट्रीय कम्पनीयों द्वारा पिछड़े क्षेत्रों में भी उद्योगों की स्थापना हुई, जिससे औद्योगिक भूगोल की विषय में परिवर्तन आया व विस्तार होने लगा।

2 अध्याय उद्योगों का वर्गीकरण

उद्योगों का वर्गीकरण

- किसी भी देश में अनेक प्रकार के उद्योग देखे जाते हैं जिनकी कच्ची सामग्री की आवश्यकता व उत्पाद भी अलग-अलग होते हैं। इस आधार पर उद्योगों को कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :-

→ 1. प्रयुक्त कच्चे माल के आधार पर -

[A] कृषि आधारित उद्योग

- इन उद्योगों को कच्चा माल कृषि से प्राप्त होता है। जैसे :-
  - सूती वस्त्र उद्योग
  - ऊनी वस्त्र उद्योग
  - जूट वस्त्र उद्योग
  - रेशम वस्त्र उद्योग
  - रबर उद्योग
  - बीयर उद्योग
  - शराब उद्योग
  - चीनी उद्योग
  - चाय उद्योग
  - कॉफी उद्योग
  - वनस्पति तेल उद्योग

ब. पशु आधारित उद्योग -
- मांस उद्योग

[B] खनिज आधारित उद्योग

- इन उद्योगों को कच्चामाल खनिजों से प्राप्त होता है। जैसे
  - लौहा इस्पात उद्योग
  - सीमेन्ट उद्योग
  - सीसा-जस्ता उद्योग
  - एल्युमिनियम उद्योग
  - मशीन व औजार उद्योग
  - पेट्रोलियम रसायन उद्योग

Toppersnotes Unleash the topper in you

- चमड़ा उद्योग
- हाथी-दाँत उद्योग

c. रसायन आधारित उद्योग-
- उर्वरक उद्योग
- कीटनाशक उद्योग
- साबुन उद्योग
- तेल शोधन उद्योग

→2. प्रमुख भूमिका के आधार पर -

A. आधारभूत उद्योग
- वे उद्योग जो उत्पादन व कच्चे माल के लिए दूसरे उद्योगों पर निर्भर होते हैं जैसे :-
- लौह-इस्पात उद्योग
- ताँबा उद्योग
- AL उद्योग

B. उपभोक्ता उद्योग
- वे उद्योग जो वस्तु का उत्पादन सीधे उपभोक्ता के उपयोग हेतु करते हैं जैसे :-
- चीनी उद्योग
- कागज उद्योग

→3. पूँजी निवेश के आधार पर -

(i) कुटीर उद्योग
- इसमें परिवार के सदस्य ही कार्य करते हैं।
- मशीनरी का उपयोग कम होता है।
- पूँजी - 1 से 5 लाख तक

मध्यम उद्योग
- इसमें परिवार के सदस्यों के साथ मजदूरों को भी रखा जाता है।
- मशीनरी का कुछ उपयोग होता है।
- पूँजी 1 करोड़ से कम

वृहद् उद्योग
- बड़े श्रमिकों की आवश्यकता होती है।
- उच्च तकनीकी व मशीनरी का उपयोग होता है।
- पूँजी - 1 करोड़ से अधिक

Toppersnotes Unleash the topper in you

4. स्वामित्व के आधार पर –

I सार्वजनिक उद्योग –

इस उद्योग में सार्वजनिक क्षेत्र में लगे सरकारी एजेन्सीयों द्वारा प्रबन्धन तथा सरकार द्वारा संचालित उद्योग होते हैं। जैसे:- भारत हैवी इलेक्ट्रीकल्स लिमिटेड
- स्टील ऑथोरेटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड

II निजी क्षेत्र के उद्योग –

ऐसे उद्योगों में किसी एक समूह या किसी एक व्यक्ति का स्वामित्व होता है। जैसे:-
- TATA iron & Steel Comp.
- Bajaj Auto lit.
- Dabur industries

III संयुक्त उद्योग –

ऐसे उद्योग राज्य सरकार व निजी क्षेत्र दोनों के संयुक्त प्रयास से चलते हैं। जैसे:- Oil india lit.

IV सहकारी उद्योग –

इन उद्योगों का स्वामित्व कच्चेमाल की आपूर्ति करने वाले उत्पादकों तथा श्रमिकों दोनों का होता है। लाभ-हानि का बंटवारा भी आनुपातिक होता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

5. विचलन उद्योग –

- इसे Footloose उद्योग भी कहा जाता है।
- ये उद्योग किसी कारक विशेष से बंधे नहीं होते है, इन्हें कहीं भी स्थापित किया जा सकता है।
- इन उद्योगों को King of Location भी कहा जाता है।
- यह उद्योग कौशल आधारित होते है।
- इनमें परिवहन भागत का कम महत्त्व होता है।

जैसे:- Auto Mobile उद्योग

- इंजनीयरिंग उद्योग
- इलेक्ट्रॉनिक उद्योग – घड़ी, रेडियो, T.V., Computer, Mobile etc.

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3 अध्याय विश्व के उद्योग

विश्व के उद्योग

- उद्योग किसी भी व्यवस्थित व क्रमबद्ध कार्य को कहते हैं।
- उद्योगों में विभिन्न प्रकार के कार्य शामिल किये जाते हैं।
- उद्योगों की संकल्पना प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान समय तक जारी है हालांकि इसकी विचारधारा में समय के साथ परिवर्तन आया है।
- उद्योगों में प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं से लेकर तृतीयक क्रियाओं को शामिल किया जाता है।

→ उद्योग के विविध पक्षों को 4 भागों में विभाजित किया जा सकता है :-

1. निष्कर्षण उद्योग [Extractive Industries]
2. पुनरूत्पादक उद्योग [Reproductive Industries]
3. वस्तु निर्माण उद्योग [Manufacturing Industries]
4. सहायक उद्योग [Facilitative Industries]

1. निष्कर्षण उद्योग –

इस उद्योग में उन सभी आर्थिक क्रियाओं को शामिल किया जाता है जो पृथ्वी तल पर पाये जाने वाले पदार्थों या संसाधनों को मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सीधे ग्रहण किया जाता है।

जैसे :- मछली पकड़ना।
- वन्य पशुओं का शिकार।
- वस्तुओं का संग्रह
- लकड़ी काटना
- खनिज निकालना

2. पुनरूत्पादक उद्योग –

इनको प्रकृति से सीधे रूप में ग्रहण नहीं किये जाते हैं। जैसे :- कृषि
- पशुचारण

3. वस्तु निर्माण उद्योग –

निष्कर्षण उद्योग व पुनरूत्पादक उद्योगों से प्राप्त वस्तुओं का कच्ची सामग्री के रूप में प्रयोग करके उनके रूप में परिवर्तन कर अधिक उपयोगी बनाया जाता है। ये विनिर्माण उद्योग कहलाते हैं।

4. सहायक उद्योग –

चतुर्थक व तृतीयक कार्य सहायक उद्योगों में शामिल किये जाते हैं।

→ उत्पादन के पैमाने के आधार पर उद्योगों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है –

1 कुटीर उद्योग
2. लघु पैमाने के उद्योग
3. वृहत पैमाने के उद्योग

1. कुटीर उद्योग –

- कुटीर उद्योगों में वस्तुओं का उत्पादन छोटे पैमाने पर होता है।
- इन उद्योगों में प्राय एक परिवार के लोग ही श्रम करते हैं।
- ये उद्योग शारीरिक श्रम से चलते हैं।

- कुटीर उद्योग विश्व के प्राचीनतम उद्योग हैं। प्राचीनकाल में जब मशीनों का चलन नहीं होने के कारण वस्तु निर्माण का कार्य हाथों से ही करना पड़ता था।
जैसे:- मिट्टी से बर्तन बनाना
  - चमड़े से जूते, बेल्ट, वस्त्र-तम्बू
  - कपड़ा बुनना इत्यादि।

2. लघु पैमाने के उद्योग –

- लघु पैमाने के उद्योग कुटीर उद्योगों से बड़े व वृहत् पैमाने के उद्योगों से छोटे होते हैं।
- लघु पैमाने के उद्योगों की कोई निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती लेकिन ऐसा माना जाता है कि कम मशीनरी व 15-20 श्रमिक कार्य करते हो ऐसे उद्योगों को कहा जाता है।
- वर्तमान समय में लघु पैमाने के उद्योगों का महत्व कम हुआ है।

3. वृहत् पैमाने के उद्योग –

- वृहत् पैमाने के उद्योगों का औद्योगिक क्रान्ति से हुआ है। वाष्प चलित मशीनों के आविष्कार के बाद बड़े पैमाने पर उद्योग स्थापित होने लगे हैं।
- साथ-साथ ही औद्योगिक क्रान्ति के बाद वैज्ञानिक ज्ञान व तकनीकी ज्ञान में भी वृद्धि होने लगी जिस कारण बड़े उद्योगों का विकास तीव्र गति से हुआ।
- इन उद्योगों में बड़े पैमाने पर श्रमिकों की आवश्यकता होती है।

- इन उद्योगों में बड़े पैमाने पर पूँजी व मशीनरी की आवश्यकता होती है।
- वृहत् उद्योगों पर किसी राष्ट्र की आर्थिक उन्नति निर्भर करती है।

→ औद्योगिक उत्पादन से 2 प्रकार की वस्तुएँ निर्मित होती हैं —

1. उत्पादक वस्तुएँ [Capital Goods] — जो वस्तुएँ अन्य वस्तुओं के उत्पादन में काम आती हो।
- उत्पादक वस्तुओं के लिए एक श्रृंखला की आवश्यकता होती है। जैसे :- कमीज के लिए → कपास चुनना – साफ करना - धागा बनाना - सिलाई करना - परिवहन - बाजार।

2. उपभोग वस्तुएँ [Consumer Goods] — जिन वस्तुओं का सीधा प्रयोग अपनी आवश्यकता के लिए किया जाता है।
जैसे :- साइकिल, वस्त्र, घड़ी इत्यादि।

4 अध्याय विनिर्माण उद्योग

विनिर्माण उद्योग

- उद्योग शब्द का अर्थ - आर्थिक क्रिया या व्यवसाय के संदर्भ में किया जाता है।

→ उद्योगों को 4 भागों में विभक्त किया जाता है –

1. निष्कर्षण उद्योग [Extractive Industries] –

- इन उद्योगों में उन क्रियाओं को शामिल किया जाता है जिनमें प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों का प्रत्यक्ष रूप से उपयोग किया जाता है।

जैसे :- खनन कार्य
- मत्स्यन
- पशुओं का आखेट
- लकड़ी काटना

] ये उद्योग प्राथमिक क्रिया के अंग है।

2. पुनरुत्पादक उद्योग [Reproductive Industries] –

- इसके अन्तर्गत प्रकृति व भूमि के सहभोग से वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।

जैसे :- कृषि कार्य करना
- पशुपालन

] ये उद्योग भी प्राथमिक क्रिया में शामिल है।

3. विनिर्माण उद्योग [Manufacturing Industries] –

विनिर्माण उद्योग में निष्कर्षण उद्योग व पुनरुत्पादक उद्योग से प्राप्त

होने वाली कच्ची सामग्री से नये उत्पाद बनाये जाते हैं। विनिर्माण उद्योग को द्वितीयक क्रिया में शामिल किया जाता है।
जैसे:- वस्त्र उद्योग
- लौह इस्पात उद्योग

4 सहायक उद्योग [Facilitative Industries] -

- इन उद्योगों में उन क्रियाओं को शामिल किया जाता है जिनके द्वारा प्रत्यक्ष रूप से किसी वस्तु का उत्पादन नहीं किया जाता है लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से वस्तुओं के उत्पादन में सहायक होती है।
जैसे:- शिक्षा
- स्वास्थ्य एवं सफाई
- प्रबन्धन
- प्रशासन
- मनोरंजन

सहायक उद्योगों को III^rd व IV^th क्रियाओं में शामिल किया जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

→ विनिर्माण उद्योग के आधार –

- विनिर्माण उद्योग सभी प्रकार के उद्योगों में महत्त्वपूर्ण उद्योग है। जिससे कच्ची सामग्री से तैयार माल बनाया जाता है।
- किसी भी उद्योग के लिए कुछ अनिवार्य तत्त्व होते हैं जो निम्न हैं:-
  - कच्चामाल
  - बाजार
  - श्रम
  - परिवहन
  - शक्ति
  - पूंजी

→ उद्योगों के स्थानीयकरण के कारण –

किसी भी उद्योग को स्थापित करने के लिए तीन महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने होते हैं।

1) कार्यकारी पैमाना –

इसमें किस वस्तु का कितना उत्पादन करना है व किस मूल्य पर उपभोक्ता तक पहुँचानी है। जिससे आर्थिक लाभ कमाया जा सके व तैयार वस्तु की Price भी कम हो।

2) तकनीकी निर्णय

3) उद्योग की स्थिति –

उद्योग को स्थापित करने के लिए निम्न स्थितियों पर ध्यान देना आवश्यक है –

1. कच्चा माल – विनिर्माण उद्योग के लिए सबसे प्राथमिक आवश्यकता कच्चे माल की होती है।